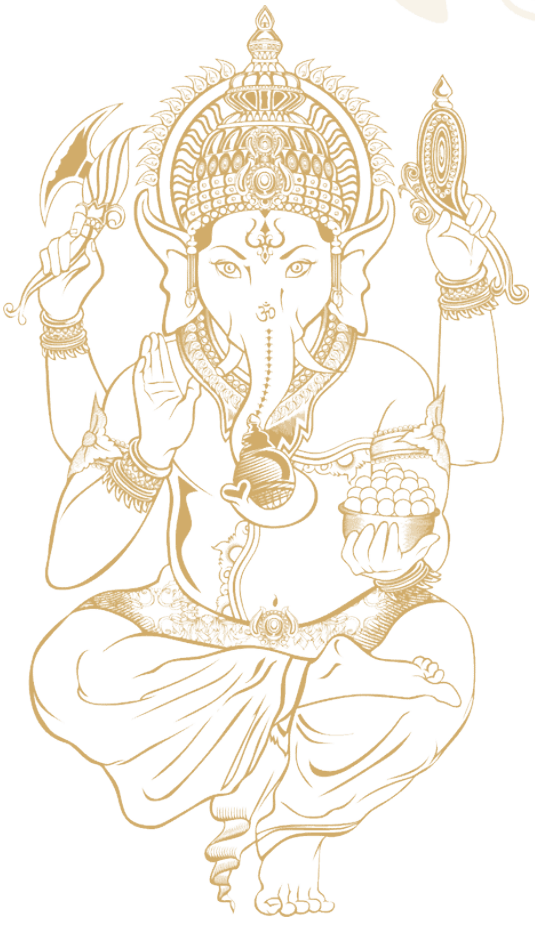

Vanshikaa jain

11 Nov 2012

07:30 AM

Patna

Model: Baby-Horoscope **Order No: 121140801**

तिथि 11/11/2012 **समय** 07:30:00 **वार** रविवार **स्थान** Patna **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:02:25
अक्षांश 25:37:00 उत्तर **रेखांश** 85:12:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** 00:10:48 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	11:03:17 घं
वेलान्तर	00:15:59 घं
सूर्योदय	06:04:21 घं
सूर्यास्त	17:02:07 घं
चैत्रादि संवत	2069
शक संवत	1934
मास	कार्तिक
पक्ष	कृष्ण
तिथि	12
नक्षत्र	हस्त
योग	विष्कुम्भ
करण	तैतिल

अवकहड़ा चक्र

गण	देव
योनि	महिष
नाड़ी	आद्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	मानव
वर्ग	मेष
युँजा	मध्य
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	ष-षटतिला
पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-रजत
होरा	शुक्र
चौघड़िया	चर

विंशोत्तरी

चन्द्र 5वर्ष 8मा 20दि

राहु

02/08/2025
03/08/2043

राहु	14/04/2028
गुरु	08/09/2030
शनि	15/07/2033
बुध	01/02/2036
केतु	19/02/2037
शुक्र	20/02/2040
सूर्य	13/01/2041
चन्द्र	15/07/2042
मंगल	03/08/2043

योगिनी

संकटा 4वर्ष 6मा 28दि

भ्रामरी

11/06/2023
11/06/2027

भ्रामरी	20/11/2023
भद्रिका	10/06/2024
उल्का	09/02/2025
सिद्धा	20/11/2025
संकटा	10/10/2026
मंगला	20/11/2026
पिंगला	09/02/2027
धान्या	11/06/2027

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			12:46:04	वृश्चि	अनुराधा	3	शनि	मंगल	---	0:00			
सूर्य			25:02:39	तुला	विशाखा	2	गुरु	बुध	नीच राशि	1.31	आत्मा	पितृ	क्षेम
चंद्र			15:42:05	कन्या	हस्त	2	चंद्र	शनि	मित्र राशि	1.07	मातृ	मातृ	जन्म
मंगल			01:25:42	धनु	मूल	1	केतु	शुक्र	मित्र राशि	1.21	कलत्र	भ्रातृ	वध
बुध	व	अ	08:55:52	वृश्चि	अनुराधा	2	शनि	शुक्र	सम राशि	1.34	ज्ञाति	ज्ञाति	प्रत्यारि
गुरु	व		20:04:56	वृष	रोहिणी	4	चंद्र	केतु	शत्रु राशि	1.12	भ्रातृ	धन	जन्म
शुक्र			22:27:06	कन्या	हस्त	4	चंद्र	शुक्र	नीच राशि	1.27	अमात्य	कलत्र	जन्म
शनि			10:18:24	तुला	स्वाति	2	राहु	गुरु	उच्च राशि	1.25	पुत्र	आयु	विपत
राहु	व		02:02:07	वृश्चि	विशाखा	4	गुरु	राहु	शत्रु राशि		---	ज्ञान	क्षेम
केतु	व		02:02:07	वृष	कृतिका	2	सूर्य	गुरु	सम राशि		---	मोक्ष	अतिमित्र

लग्न-चलित

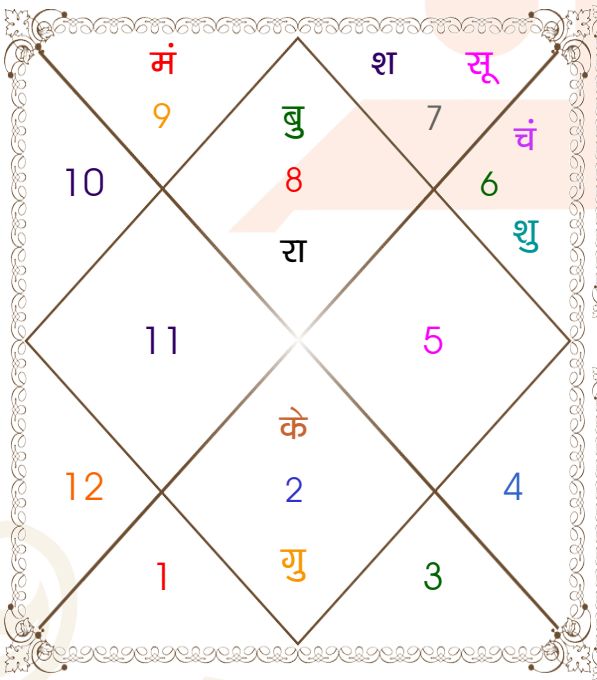

चन्द्र कुंडली

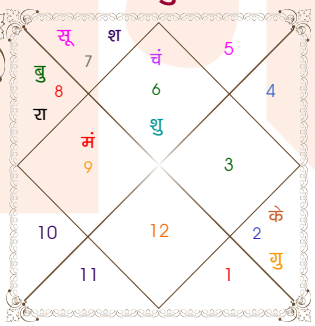

नवमांश कुंडली

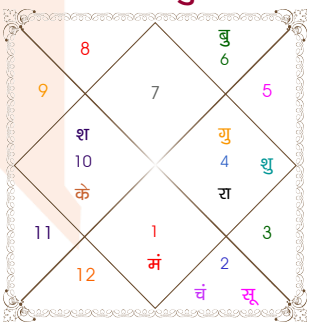

सर्वाष्टकवर्ग

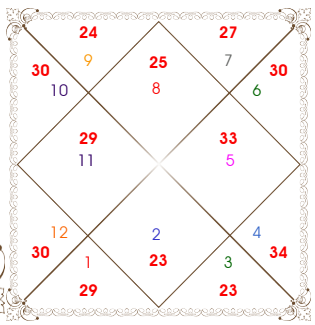

दशमांश कुंडली

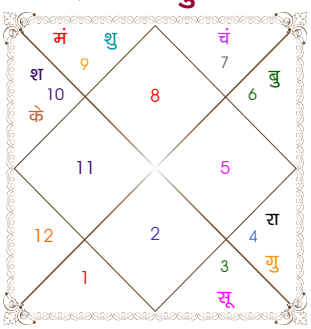

Pulak Sagarm
T-13, Cosmo Tower
Hanuman Chauraha, jank ganj
Gwalior - Pin - 474001
9425187186, 9302614644
Astrodr.hcjain@gmail.com

नक्षत्रफल

आप हस्त नक्षत्र के द्वितीय चरण में पैदा हुई हैं। अतः आपकी जन्मराशि कन्या तथा राशिस्वामी बुध होगा। नक्षत्रानुसार आपकी नाड़ी आद्य, वर्ण वैश्य, गण देव, वर्ग मेष तथा योनि महिष होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "ष" या "श" से प्रारम्भ होगा।

आपकी स्वाभाविक प्रवृति दानशीलता की रहेगी तथा अवसरानुकूल आप यथा शक्ति जरूरतमंद लोगों को अपनी इस प्रवृति का परिचय देती रहेंगी। आप एक यशस्वी महिला होंगी तथा समाज में दूर दूर तक आपकी ख्याति फैलेगी। आप छोटे बड़े या अमीर गरीब किसी भी प्रकार का भेदभाव अपने मन में नहीं करेंगी तथा सभी लोगों से समान रूप से व्यवहार करेंगी। आपके मन में सबके लिए सम्मान एवं आदर का भाव विद्यमान रहेगा। आपकी प्रवृति धार्मिक भी होगी तथा ब्राहमणों एवं देवताओं के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा का भाव निहित रहेगा।

दाता मनस्वी सुतरां यशस्वी भूदेवदेर्वाचनकृत्प्रयत्नतः।
प्रसूति काले यदि यस्य हस्तो हस्तोद्गता तस्य समस्तसम्पत्।।
जातकाभरणम्

अर्थात् हस्त नक्षत्र में उत्पन्न जातक दाता, मनस्वी, अतियशवाला, देवता और ब्राह्मणों का भक्त तथा सर्वप्रकार की सम्पति से सदैव युक्त रहता है।

आप समस्त सांसारिक एवं भौतिक सुखों को प्राप्त करने तथा उनके उपभोग करने में पूर्ण रूप से सफल रहेंगी तथा किसी भी सुख का आप अभाव महसूस नहीं करेंगी। आप एक श्रेष्ठ विदुषी एवं सर्वगुण सम्पन्न महिला होंगी। आपकी प्रवृति परोपकार की तरफ भी अग्रसर रहेगी तथा दूसरों के हित के लिए किए गये कार्यों में अपना तन मन धन से सहयोग देने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी। साथ ही आप पारलौकिक कार्यों के लिए पुण्य इत्यादि शुभकार्यों को सम्पन्न करने में भी तत्पर रहेंगी।

हस्तर्क्षे यदि कामधर्मनिरतः प्राज्ञोपकर्ता धनी।
जातकपरिजातः

अर्थात हस्त नक्षत्रोत्पन्न जातक सांसारिक भोग्य पदार्थ तथा पारलौकिक शुभ कर्मो को करने वाला तथा धनवान होता है।

आप के चित्त में उत्साह के भाव की हमेशा प्रबलता रहेगी अतः आपके अधिकाँश सांसारिक कार्य उत्साह से सम्पन्न होंगे। लज्जा का भाव भी आप में ही विद्यमान रहेगा। ही मन से आप अत्यन्त कठोर होंगी तथा दया एवं करूणा के भाव की इसमें न्यूनता रहेगी।

उत्साही धृष्टः पानपोळघृणी तस्करो हस्ते।

अर्थात् हस्त नक्षत्र में उत्पन्न जातक उत्साही, लज्जाहीन, मदिरा का सेवन करने वाला, घृणा न करने वाला एवं तस्कर होता है।

आप समय के अनुसार परिवर्तन करने में विश्वास करेंगी तथा अवसरानुकूल मिथ्या भाषण करने में भी नहीं चूकेंगी। साथ ही कभी कभी आपके स्वभाव में कठोरता के भाव का भी समावेश होगा तथा समाज में अपने इस भाव का प्रदर्शन करेंगी। संबंध रहेंगे। आप अपने समीपस्थ बन्धु बांधवों से भी विहीन रहेंगी तथा समय समय पर आपको इनसे सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

असत्यवचनो धृष्टः सुरापी बन्धुवर्जितः।
हस्तो जातो नरश्चौरो जायते पारदारिकः।।
मानसागरी

अर्थात् हस्त नक्षत्र में उत्पन्न जातक झूठ बोलने वाला, निर्लज्ज, मद्यपान करने वाला बन्धुओं द्वारा वर्जित, चोर तथा अन्य स्त्रियों से सम्बन्ध रखने वाला होता है।

आप स्वर्ण पाद में पैदा हुई हैं। स्वर्ण पाद में पैदा होने के कारण जातक कई प्रकार से जीवन में दुःख एवं कष्ट प्राप्त करता है तथा इसमें उसका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता एवं धनाभाव से भी नित्य दुःखी रहता है। साथ ही जीवन में उसे सुखसंसाधनों की भी अल्पता रहती है। जिससे उसके मन में नित्य तनाव व्याप्त रहता है। साथ ही प्रत्येक क्षेत्र में उसे अत्याधिक परिश्रम के द्वारा ही सफलता अर्जित हो सकती है। परन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा शुभ वर्ग में स्थित है। अतः इससे आपको अशुभ फल अल्प तथा शुभ फल अधिक मात्रा में प्राप्त होंगे।

अतः आप जीवन में सम्पूर्ण सुखसंसाधनों से युक्त रहेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगी। साथ ही धन ऐश्वर्य एवं नौकर चाकरों से भी आप सम्पन्न रहेंगी। आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगी तथा एक धनवान महिला के रूप में समाज में ख्याति अर्जित करेंगी। सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे एवं आपको यथोचित सम्मान भी प्रदान करेंगे। आप विभिन्न प्रकार के वाहनादि से भी सुशोभित रहेंगी। आप हमेशा सद्गुणों से सुसम्पन्न रहेंगी। आपके पति तथा पुत्र भी सुन्दर गुणवान एवं सम्मानित रहोंगे। साथ ही सेवक गण भी गुणसम्पन्न होंगे। आपकी आयु दीर्घायु होगी तथा आपके लिए लाभमार्ग हमेशा प्रशस्त रहेंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शारीरिक कान्ति भी दर्शनीय रहेगी। इसके अतिरिक्त पुत्रादि सुख को आप प्राप्त करने में भी सौभाग्यशाली रहेंगी।

कन्या राशि में जन्म लेने के कारण आपके हाथ अधिक लम्बे होंगे। आपकी शारीरिक सुन्दरता दर्शनीय होगी एवं शरीर के अन्य भाग नाक, कान, दाँत, मुख भी सौन्दर्य से युक्त रहेंगे। आप एक महान विदुषी होंगी तथा कई धार्मिक संस्थाओं की आप संचालिका होंगी एवं उनमें किसी अच्च पद को प्राप्त करेंगी। आप की प्रवृति धर्मनिष्ठ होगी तथा धार्मिक

कृत्यों का प्रयत्न पूर्वक पालन करेंगी। आप की वाणी भी मृदु एवं प्रिय रहेगी जो श्रोता को आनन्द प्रदान करेगी। इससे अन्य लोग आपसे प्रसन्न एवं प्रभावित रहेंगे। सत्य के अनुपालन करने के लिए भी आप सर्वथा प्रयत्नशील रहेंगी एवं सफाई या शुद्धता के प्रति विशेष रूप से सतर्क रहेंगी। आप एक धैर्यशाली महिला भी होंगी तथा अपने समस्त कार्यों को चंचलता से नहीं अपितु धैर्यपूर्वक सम्पन्न करेंगी। आपका स्वभाव दूसरों की भलाई करने में भी प्रवृत रहेगा तथा जनता के हित के लिए किए गये कार्यों में आप पूर्ण प्रयत्नशील रहेंगी। साथ ही समस्त प्राणियों के प्रति आपके मन में दया एवं करूणा का भाव सर्वथा विद्यमान रहेगा। इसके अतिरिक्त आप एक सौभाग्यशाली महिला होंगी तथा भाग्य बल से सर्वसुखों को प्राप्त करेंगी। आपकी कन्या सन्तति अधिक तथा पुत्र संतति अल्प मात्रा में रहेगी।

स्त्रीलोलो लम्बबाहुर्ललिततनुमुखश्चारूदन्ताक्षिणिकर्णो।
विद्धानाचार्य धर्मा प्रियवचनयुतः सत्यशील प्रधानः।।
धीरः सत्वानुकम्पी परविषयरतः क्षान्तिसौभाग्यभागी।
कन्याप्रायप्रसूतिबहुसुतरहितः कन्यकायां शशाङ्कः।।
सारावली

आप लज्जाशील तथा आलस्यमयी सुन्दर दृष्टि से युक्त होकर गमनशील रहेंगी। आपकी भुजाएं तथा कन्धे अल्प शिथिलता को प्राप्त रहेंगे। आप सम्पूर्ण सांसारिक तथा भौतिक सुखों से सम्पन्न रहेंगी। आप नाना प्रकार की कलाओं का ज्ञान रखने वाली होंगी तथा विविध प्रकार के शास्त्रों का तत्व ज्ञान अर्जन करने में भी आप सफलता प्राप्त करेंगी। साथ ही आप किसी बन्धु मित्र या अन्य व्यक्ति के धन का भी आन्नदपूर्वक उपभोग करेंगी एवं विदेश में निवास करने की इच्छा भी आपके मन में व्याप्त रहेगी। आपके शरीर की लावण्यता भी दर्शनीय रहेगी।

व्रीळामंथरचारूवीक्षणगतिः स्रस्तांसवाहुः सुखी।
श्लक्षणः सत्यरतः कलासुनिपुणः शास्त्रार्थविद्धार्मिकः।।
मेधावी सुरतप्रियः परगृहे वितैश्च संयुज्यते।
कन्यायां परदेशगः प्रियवचः कन्याप्रजोळल्पात्मजः।।
बृहज्जातकम्

अन्य जनों को आप अपनी हास्य एवं विलासमयी क्रियाओं के द्वारा अपनी तरफ आकर्षित करने में पूर्ण रूप से सफल रहेंगी तथा ये लोग भी आपसे पूर्ण प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। आप सरल तथा सुशील स्वभाव से युक्त महिला होंगी तथा हमेशा सत्कार्यों को करने की इच्छा से प्रवृत रहेंगी तथा यत्नपूर्वक इसको करने में ही तत्पर रहेंगी। इसके साथ ही आप एक सौभाग्यशाली महिला होंगी तथा अपने अधिकाँश कार्यों में भाग्यबल से सफलता प्राप्त करेंगी।

युवतिगे शशिनि प्रमदाजनप्रबलकेलिबिलासकुतूहलैः।
विनयशील सुताजननोत्सवै सुविधिना सहितः पुभान।।
जातकाभरणम्

आपकी बुद्धि अत्यन्त ही निर्मल एवं स्वच्छ रहेगी छल कपट तथा दिखावे की आपके मन में कोई भी भावना विद्यमान नहीं रहेगी । लेखन कार्य के प्रति प्रारम्भ से ही आपकी बुद्धि रहेगी तथा कविता लेखन में आप सफलता प्राप्त कर सकेंगी। आप हमेशा सुसम्पन्न रहेंगी आप हमेशा शान्त एवं स्थिर चित्त की महिला रहेंगी। आपकी आखों में यदा कदा कष्ट रहेगा। इसके अतिरिक्त गुरूजनों के प्रति आपकी अगाध श्वद्धा होगी तथा उनके हित कार्यो को करने में आप हमेशा तत्पर रहेंगी।

विमलमति सुशीलो लेखबुद्धिः कविश्च।
कृषिबलगुणशाली शान्तियुग्मः स्वभावः।।
भवति नयनरोगी धार्मिकः शीलयुक्तः।।
गुरूजन हितकर्ता कन्यका यस्य राशिः।।
जातकदीपिका

आप विलास युक्त प्रवृति से युक्त रहेंगी तथा समस्त भौतिक प्रदार्थो का सुख पूर्वक उपभोग करने में सफल रहेंगी। सज्जन एवं ज्ञानी जनों के प्रति आपके मन में आदर का भाव सदा विद्यमान रहेगा तथा ये लोग भी आपसे हमेशा प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। आप समय समय पर अपनी दानशीलता की प्रवृति का भी समाज में प्रदर्शन करती रहेंगी। वैदिक धर्म में आपकी पूर्ण आस्था तथा निष्ठा रहेगी एवं यत्नपूर्वक जीवन में इसका पालन करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगी। संगीत तथा अभिनय के प्रति आपका विशिष्ट लगाव रहेगा। इसके अतिरिक्त समाज के सभी वर्गो में आप लोकप्रिय रहेंगी।

विलासी सुजनाह्लादी सुभगो धर्मपूरितः।
दातादक्षः कविर्बुद्धि वेदमार्ग परायणः।।
सर्वलोकप्रियो नाट्यगान्धर्व व्यसने रतः।
प्रवासशीलः स्त्री दुखी कन्याजातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

आपका सम्पूर्ण जीवन पूर्ण सुख संसाधनों से सुख सम्पन्न रहेगा तथा अन्य लोगों से आपका व्यवहार अत्यन्त ही मधुर रहेगा तथा उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव विद्यमान रहेगा। इसके अतिरिक्त नानाप्रकार की कलाओं तथा शास्त्रों की आप अच्छी ज्ञाता रहेंगी।

कन्यास्थे विषयातुरो ललितवाग्मि विद्याधिको भोगवान।
जातकपरिजातः

देवगण में उत्पन्न होने के कारण आप श्रेष्ठ एवं मधुर वाणी से सदा युक्त रहेंगी। आपकी प्रियवाणी सबको अच्छी लगेगी। आप हमेशा सत्य के पालन के लिए आजीवन प्रयत्नशील भी रहेंगी। आपकी बुद्धि अत्यन्त ही सादगी युक्त रहेगी तथा आप सुगमता पूर्वक अपने विचारों को प्रकट करेंगी तथा अन्य के विचारों को भी सुगमता से हृदयंगम कर सकेंगी। आप को अल्प मात्रा में भोजन करना अत्यन्त ही रुचिकर लगेगा। अन्य लोगों के गुणों के विषय में आपको पूर्ण ज्ञान रहेगा तथा स्वयं भी श्रेष्ठ विद्वानों द्वारा प्रतिपादित सद्गुणों से सदा

सुशोभित रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप अपने जीवन में नानाप्रकार की सुख सम्पत्तियों से सुसम्पन्न रहकर उनका प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगी।

आप देखने में अत्यन्त सुन्दर एवं सौन्दर्य से युक्त होंगी तथा दानशीलता का भाव आपके मन में सर्वदा विद्यमान रहेगा। आप सादगी से रहना पसन्द करेंगी तथा भौतिकता से हमेशा दूर रहेंगी। साथ ही आप एक उत्तम कोटि की विदुषी होंगी तथा समाज में आप पूर्ण आदर एवं सम्मान प्राप्त करेंगी।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

महिष योनि में जन्म लेने के कारण आप वाद विवादों तथा लड़ाई झगड़ों के मामलों में अधिकाँश विजयी रहेंगी तथा स्वयं भी आप एक साहसी तथा वीरता के गुणों से सुसम्पन्न रहेंगी। आप की संतति सख्या अध्कि होगी आप वातप्रधान प्रकृति की महिला रहेंगी तथा धर्म के प्रति भी आपके मन में आस्था तथा निष्ठा का भाव विद्यमान रहेगा।

संग्रामे विजयी योद्धा सकामस्तु बहुप्रजः।
वाताधिको मन्दमतिर्नरो महिषयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात् महिष योनि में उत्पन्न जातक युद्ध के मैदान में विजय प्राप्त करने वाला, योद्धा, कामाग्नि से प्रबल, अधिक संतति वाला, वायु प्रधान प्रवृति तथा धर्म के प्रति निष्ठावान रहता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा एकादश भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष वात्सल्य का भाव भी विद्यमान रहेगा। जीवन में वे प्रत्येक क्षेत्र में आपका यत्नपूर्वक पूर्ण सहयोग करती रहेंगी। आपके आर्थिक साधनों की अभिवृद्धि में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा। साथ ही मातृपक्ष से भी आप पूर्ण आर्थिक लाभ एवं अन्य प्रकार से सुखार्जन करेंगी।

आप की भी माता के प्रति हादिक श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेंगी एवं उनकी आज्ञा पालन के लिए भी आप प्रायः तत्पर रहेंगी। जीवन में आप हर प्रकार से उनकी सहायता एवं सहयोग भी करेंगी तथा अवसरानुकूल उनको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा आपसी मतभेद अत्यन्त ही अल्प मात्रा में रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य

मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा एवं जीवन में हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी सहायता करते रहेंगे। साथ ही उनकी प्रवृति पुण्य एवं दान संबंधी कार्यों को करने की रहेगी अतः आपको भी वे पुण्य कार्यों की ओर प्रेरित करेंगे। साथ ही धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण आदर की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों से संबंधों में कटुता या तनाव उत्पन्न होगा परन्तु कुछ समय के बाद स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। जीवन में आप उनके सुख दुःख का भी ध्यान रखेंगी एवं समयानुसार उनको पूर्ण सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कोई कष्ट नहीं होने देंगी।

आपके जन्म समय में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता की वे अनुभूति करेंगे। विद्यार्जन एवं धनार्जन संबंधी कार्यों में आप एक दूसरे का प्रेम पूर्वक सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी तथा आपसी संबंध भी मधुर होंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के उत्पन्न होने पर संबंधों में कुछ कटुता एवं तनाव का वातावरण बनेगा लेकिन कुछ समय के बाद सब कुछ ठीक हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप हमेशा सुख दुःख में उनका साथ देंगी एवं यथाशक्ति अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगी। इस प्रकार आप मिलजुल कर एक दूसरे का सहयोग करेंगी।

आपके लिए भाद्रपद मास, पंचमी, दशमी, पूर्णमासी तिथियां, श्रवण नक्षत्र, शुभयोग, कौलवकरण, शनिवार प्रथम प्रहर तथा वृश्चिक राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फल दायक रहेंगे अतः आप 15 अगस्त से 14 सितम्बर के मध्य 5,10,15 तिथियों श्रवण नक्षत्र शुभयोग तथा कौलवकरण में कोई भी शुभकार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को प्रारम्भ न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शनिवार, प्रथम प्रहर तथा वृश्चिक राशि के चन्द्रमा को भी शुभकार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति भी सावधान रहें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक अशान्ति, शारीरिक व्याकुलता अथवा व्यापार में हानि नौकरी या पदोन्नति प्राप्ति करने में व्यवधान उत्पन्न हो रहे हों या अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में असफलता मिल रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव गणेश जी की उपासना करनी चाहिए तथा गणेश चतुर्थी तथा बुधवार के उपवास रखने चाहिए । साथ ही सोना, पन्ना, मूंग की दाल इत्यादि प्रदार्थो का किसी सुपात्र को दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त बुध के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 17000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अन्य अशुभ प्रभाव में कमी होकर शुभ फलों की प्राप्ति होगी।

ॐ ब्रां ब्रीं ब्रों सः बुधाय नमः।
मंत्र- ॐ ऐं स्त्रीं श्रीं बुधाय नमः।

Pulak Sagarm
T-13, Cosmo Tower
Hanuman Chauraha, jank ganj
Gwalior - Pin - 474001
9425187186, 9302614644
Astrodr.hcjain@gmail.com